SNSRKS, College

Lecture no 38

Topic: Introduction to child psychology

Subject : Home science

B.A.Part3(Hons)Paper5

Class conducted by:

Dr.Bandana kumari

(Guest lecturer)

Dept.of home science

S.N.S.R.K.S.College

<u>बालमनोविज्ञान अथवा बालविकास-</u>

विकास की प्रक्रिया गर्भ धारण से व्यक्ति के मृत्यु तक किसी न किसी रूप में तीव्र अथवा मंद गति से चलती रहती है | मानव विकास का यह अध्ययन मनोविज्ञान के जिस शाखा के अंतर्गत किया जाता है उसे **बाल मनोविज्ञान** अथवा **बालविकास** कहा जाता है |

मनोविज्ञान की परिभाषा -

*आत्मा का अध्ययन करना - **अरस्तु** एवं **प्लेटो**

*मन का अध्ययन करना (1870 तक)- **लिगिनिज, होव्स, कांट, लॉक**

*चेतना अनुभूतियों और मानसिक क्रियाओं का अध्ययन - **बुन्ट** एवं **रिचेनर** (19 वी शताब्दी, संरचनावादी)

*व्यहवहार का विज्ञान है क्योंकि प्रत्यक्ष देखा सुना जाता है जैसे- दौड़ना, रोना, चलना, इत्यादि - **वाटसन** (आधुनिक युग / व्यवहारवादी)

*मनोविज्ञान व्यवहारों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है जिसमें व्यक्ति के व्यवहारो के साथ उसकी मानसिक क्रियाओं का भी अध्ययन किया जाता है |- **स्मिथ** एवं **हिल्गार्ड** (smith and Hilgard)

20 वीं सदी को बालकों की शताब्दी मानी जाती है |- **क्रो एंड क्रो**

<u>मनोविज्ञान से बाल मनोविज्ञान के विकास क्रम</u>

मनोविज्ञान → शिक्षा मनोविज्ञान → बाल मनोविज्ञान → बाल विकास

नोट- पिछले 50 वर्षो से ही बालमनोविज्ञान ही बाल विकास कहा जाता है |

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो सीखने या सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन करता है |- **स्कीनर**

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखाता है |- **सैन्ट्रोक**

बालक विकास की अवधारण-एक शिक्षक के तौर पर हमें बच्चों को समझने की आवश्यकता है ताकि हम उसे सीखने एवं अर्थपूर्ण ढंग से विकास की प्रक्रिया में योगदान दे सके | एक प्रभावी शिक्षक होने के लिए हमें यह समझाना आवश्यक है कि बच्चों का विकास कैसे होता है ? उन्हें किन किन प्रक्रियाओं / स्थितियों से गुजरना होता है ? उनमे कैसे शारीरिक, मानसिक, संवेदनात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक परिवर्तन होता है ? एवं उनके विकास पर किन-किन कारको का प्रभाव पड़ता है ? यह समझ बच्चों के साथ अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने तथा उनसे सीखने एवं उचित एवं अनुकूलित वातावरण बनाने में मदद करती है ताकि हम बच्चों का सर्वांगिक विकास कर सके |

बाल विकास के विभिन्न अवस्थायें

विद्वान्	**बाल विकास की अवस्थायें**
जोन्स	3
हरलोक	5
कोल	12
सामान्यतः	5
आधुनिक मनोवैज्ञानिक	4

जोन्स का वर्गीकरण -

अवस्था	**समय**
शैशवावस्था	जन्म से 5 वर्ष
बाल्यावस्था	5 से 12 वर्ष
किशोरावस्था	12 से 18 वर्ष

हरलोक का वर्गीकरण -

अवस्था	**समय**		
गर्भावस्था	गर्भ धारण से 9 महीने तक		
नवजात	जन्म से 14 दिन तक		
शैशवावस्था	2 सप्ताह से 2 वर्ष		
बाल्यावस्था	2 वर्ष से 11 वर्ष		
किशोरावस्था	11 वर्ष से 21 वर्ष		
	पूर्व किशोरावस्था (11 -13 वर्ष)	मध्य किशोरावस्था (13 - 17 वर्ष)	उत्तर किशोरावस्था (17 - 21 वर्ष)

कोल ने मानव विकास की अवस्थाओं को 12 भाग में वर्गीकृत किया है |

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का वर्गीकरण - 4 भाग में

अवस्था	**समय**	
शैशवावस्था	0 से 2 वर्ष	
बाल्यावस्था	2 से 12 वर्ष	
	पूर्व बाल्यावस्था (2 से 6 वर्ष)	उत्तर बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष)
किशोरावस्था	12 से 18 वर्ष	

व्यस्कावस्था	18 वर्ष से मृत्यु तक

शैक्षणिक दृष्टि से मानव विकास की इन 4 अवस्थाओं में प्रथम 3 अवस्थाओं का ही मुख्य रूप से अध्ययन किया जाता है |

नोट- हरलोक के अनुसार बाल्यावस्था सामान्यतः 6 से 12 वर्ष तक ही मानी जाती है |

बाल्यावस्था का परिभाषा -

बाल्यावस्था जीवन की दूसरी प्रमुख अवस्था है जिसे मनोवैज्ञानिक जीवन का **अनुपम काल** माना जाता है जो सामान्यतः **6** से **12** वर्ष तक मानी जाती है | इस अवस्था में बालकों में अनेक परिवर्तन होते है | शिक्षा आरम्भ करने के सबसे उपयुक्त आयु होने के कारण इसे **Elementarily school age,** समूह में होने के कारण **Gang age**, स्फूर्त में होने के कारण **Smart age**, गंदे और लापरवाह होने के कारण **Dirty age**, अधिक बोलने के कारण **Chatter box**, माता-पिता को अधिक तंग करने के कारण **Troublesome age** भी कहते है

बाल्यावस्था वास्तव में मानव जीवन का एक अनोखा काल व सुनहरा काल है जिसमे बालकों का सर्वांगिक विकास होता है |

ब्लेयर, जोन्स एवं **सिम्पसन** के अनुसार बाल्यावस्था वह अवस्था है जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोण मूल्यों एवं आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है |

फ्रायड एवं अनुयायियों ने बाल्यावस्था को बालक का निर्माण काल माना है | इस अवस्था में बालक जिन व्यक्ति, सामाजिक एवं शिक्षा सम्बंधित आदतों एवं व्यवहारों के प्रतिमानों का निर्माण कर लेता है | उनको रूपांतरित करना कठिन है | इसलिय प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों पर बालकों के निर्माण करने का महान उत्तरदायित्व होता है |

ब्लेयर, जोन्स एवं **सिम्पसन** के अनुसार शैक्षणिक दृष्टिकोण से जीवन चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नहीं है | जो अध्यापक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते है उन्हें बालकों का उनकी आधारभूत आवश्यकताओं, समस्याओं और परिस्थितियों का पूर्व ज्ञान होना चाहिए | जो उनके व्यवहार को रुपान्तरित एवं परिवर्तित करते है |